मुक्तक संग्रह

मुक्तक मंजरी

डॉ.अजय पाण्डेय 'बेबस'

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

मुक्तक मंजरी

अजय पाण्डेय 'बेबस'

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

वारासिवनी, मध्यप्रदेश 481331

978-93-94528-07-9

संपादक- डॉ. प्रीति समकित सुराना
आवरण चित्र- संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी
मुख्य कार्यालय- 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331
मोबाईल-9009423393
ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाईट- www.antrashabdshakti
प्रथम संस्करण- 2026, अजय पाण्डेय बेबस
मूल्य- 100/- रुपये
मुद्रक– सोनी प्रिंटकॉम, वारासिवनी

THE BOOK WRITTEN BY AJAY PANDEY

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरुत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

भूमिका

रचना मेरे लिए केवल शब्दों की सजावट नहीं, बल्कि समाज से जुड़ने का एक सशक्त माध्यम है। गीत, ग़ज़ल, कविता, मुक्तक और कहानियाँ लिखने का मेरा मूल उद्देश्य लोक-जागरण के साथ-साथ अपनी भाषा और संस्कृति का संरक्षण एवं विकास करना है। बदलते समय में जब शब्दों की सरलता और भावों की सच्चाई पीछे छूटती जा रही है, तब मेरी यह कोशिश रही है कि रचनाएँ सहज हों, भावपूर्ण हों और आम पाठक तक बिना किसी बोझ के पहुँच सकें।

मैंने सदैव यही चाहा है कि मेरी रचनाएँ पढ़कर पाठक केवल अर्थ ही न समझें, बल्कि उनमें छिपी संवेदना को भी महसूस कर सकें। जीवन के छोटे-छोटे अनुभव, समाज की सच्चाइयाँ, मानवीय रिश्तों की गहराई और लोकजीवन की धड़कन—इन सबको सरल शब्दों में प्रस्तुत करना ही मेरी लेखनी का स्वभाव रहा है। जटिलता से दूर, सीधी और आत्मीय भाषा में कही गई बात अधिक दूर तक जाती है—इसी विश्वास के साथ ये रचनाएँ सामने आई हैं।

यह पुस्तक केवल मेरा सृजन नहीं, बल्कि उन मूल्यों की अभिव्यक्ति है जो मैंने अपने जीवन में देखे, सीखे और जिए हैं। मेरी समस्त रचनाएँ मेरे स्वर्गीय पिता द्वारिकानाथ पाण्डेय एवं स्वर्गीय माता जगदंबा देवी की पुण्य स्मृति को समर्पित हैं। उनका संस्कार, उनका स्नेह और उनकी सीख ही मेरी लेखनी की वास्तविक प्रेरणा है।

आशा है कि यह कृति पाठकों के मन को छुएगी, उन्हें सोचने का एक नया दृष्टिकोण देगी और लोकहित में एक छोटा-सा सार्थक प्रयास सिद्ध होगी।

— अजय पाण्डेय ‘बेबस’

122/122/122/122

मुहब्बत इबादत, ये लिखते रहे हैं।

पत्थरों इबारत, ये लिखते रहे हैं।।

जमाने से सुनते रहे ये कहानी।

किताबों मुहब्बत, ये लिखते रहे हैं।।01

1222/1222/1222/12

भरोसे की नई दुनिया बनानी चाहिये।

जमाने की नई खुशियाँ लुटानी चाहिये।।

लुटेरे लूट धन को, हँस रहे अपने घरों।

लुटेरों से देश अपना को बचानी चाहिये।।-02

122/122/122/12

दिवाना मुहब्बत निभाता रहे।

जमाने से रिश्ता बनाता रहे।।

हमें और मिलना कुछ नहीं यहाँ!

जमाना हमारा हँसाता रहे।।-03

2212/2212/2

ये दौर भी दुश्मनों का है।

रिश्ते सभी फासलों का है।।

बेकार होने को है दुनिया।

मन बढ़ रहा जाहिलों का है।।04

1222/1222/122

हवाओं से भी, बातें क्या करेंगे?

फिजाओं से भी, बातें क्या करेंगे??

हमारी दूरियाँ अपनों से ही है।

निगाहों से भी, बातें क्या करेंगे??-05

2122/1222/2122

ख्वाहिशों को दफन करना रह गया है।

मंजिलों को कफन करना रह गया है।।

बीच अपनों गिला शिकवा क्या करेंगे?

छोड़ दुनिया गमन करना रह गया है।।-06

2122/2122/2122/212

खूबसूरत जिन्दगी, बेकार तो अपनी न कर।

और के खातिर खुशी बेकार तो अपनी न कर।।

आज के पल कौन अपना, कौन देता साथ है?

मुस्कुराती जिन्दगी बेकार तो अपनी न कर।।-07

2122/2122/2122/2122

साथ जीने और मरने की, भी बातें कौन करता?

भूल अपना, संग चलने की भी बातें कौन करता??

झूठ की दुनिया हमारी आज भी सबसे बड़ी है।

यूँ बिना मतलब के, मिलने की भी बातें कौन करता??-08

2122/122/212/122

अब किसी की दुआओं का असर नहीं है।

इश्क दुनिया वफाओं का असर नहीं है।।

प्यार में बेकसी दिखती नहीं, किसी में?

खूबसूरत अदाओं का असर नहीं है।।-09

2212/2122/2212/22

बारूद की ढेर में दुनिया, मुस्कुराएँ क्या?

आँखों नहीं नींद, सपना कोई सजाएँ क्या??

इंसानियत खो चली दुनिया, अब नहीं काम की।

अंजान दुश्मन हमारे, खुशियाँ लुटाएँ क्या??-10

2212/2212/2212/2

चाहत नहीं मुझको, कि दुनिया को रिझाऊँ?

दुश्मन किसी से हाथ अपना ये मिलाऊँ??

अंजान दुश्मन घात करने बैठे होंगे।

मैं अब नहीं ऐसे किसी से दिल लगाऊँ??-11

2212/2212/2212/2

किस बात को लेकर, बगावत, यार करते।

दुश्मन बताकर, यूँ अदावत , यार करते।।

है कुछ दिनों की जिन्दगी सबकी हमारी।

यूँ भूल खुशियाँ, क्यूँ जलालत यार करते??-12

221/122/221/12

जिनको भी सियासत करनी है, करे।

जिनको भी अदावत करनी है, करे।।

सबको तो न उलझाए कोई यहाँ?

जिनको भी अदावत करनी है, करे।।--13

22/22/22/22/22/22/22

दुनिया बर्बाद हमारी और तुम्हारी करके।

हैवानों से शैतानों से दरबारी करके।।

इस दुनिया में आज हमारे भी दुश्मन ही बनकर!

भूल सभी खुशियाँ, जीते हैं मारामारी करके।।-14

212/122/122/212

आप पर हमारी नजर थोड़े न है।

आप सा हमारा बसर थोड़े न है।।

वो शहर, जहाँ लोग मिलकर रह रहे।

आपका नया वो शहर थोड़े न है।।--15

2122/2212/2

हर किसी से मिल मुस्कुराते।

आदमी बन हँसते हँसाते।।

दोस्ती कुछ ऐसी अगर हो?

एक दुनिया अपनी बनाते।।-16

2122/1222/2122/122

दूसरों की खुशी में अपनी खुशी ढूँढ लेना।
हर घड़ी मुस्कुराए वो आदमी ढूँढ़ लेना।।
आज के पल बहुत मुश्किल काम, यारों यही है।
जिस जमी लोग मिल रहते, वो जमी ढूँढ़ लेना।?-17

2122/2122/2122/212

खूबसूरत दोस्ताना ये अमानत चाहते।
जिन्दगी यह मुस्कुराए वो जमानत चाहते।।
कुछ दिनों की जिन्दगी सबकी हमारी यार है।
हर किसी आँखों रही खुशियाँ सलामत चाहते।।-18

2122/2122/2122

बीच अपनों में बसर की सोचता हूँ।
रास आए वो शहर की सोचता हूँ।।
जिन्दगी कितनी ठगी जाती रही है?
बेवजह छपते खबर की सोचता हूँ।।-19

2212/2212/2212/2212

बर्बाद करके देश को, झूठी बगावत कर रहे।
इंसानियत खोकर, जमाने से अदावत कर रहे।।
वो चंद भी अपने हमारे देश के, यूँ बेवजह?
सपने दिखाकर मुफलिसों से मिल सियासत कर रहे।।-20

2212/2212/2212/22

ये दौर अपनों में सियासत का हुआ लगता।

बेकार कर खुशियाँ बगावत का हुआ लगता।।

तैयार बैठे आज दुश्मन लूट खाने में।

रिश्ता भी जैसे अब अदावत का हुआ लगता।।-21

2122/2122/2122/212

जिन्दगी अपनी, इसे भी मुस्कुरानी चाहिये।

मुफलिसी अपनी, जमाने से छुपानी चाहिये।।

बेवजह का डर हमें नुकसान करता यार है।

बूझ दुनिया, ख्वाब की खुशियाँ लुटानी चाहिये।।-22

122/122/122/122

अदावत, बगावत की दुनिया हमारी।

नफासत, जलालत की दुनिया हमारी।।

किसे बोलते हम, किसे टोकते हम?

मुहब्बत इबादत की दुनिया हमारी।।-23

22/22/22/22

फुर्सत के पल आते जाते।

सुख-दु:ख याद कराते जाते।।

अपना और पराया कर हम।

अपना मान गिराते जाते।।-24

22/22/22/22/22/2

दुश्मन, यार हजारों में, हँस क्या करते?

सबकी आज निगाहों भय, हँस क्या करते??

दुनिया कहती है, पंडित जात हमारा।

पंडित जात सलाखों में, हँस क्या करते??-25

22/22/22/22

धक्का मुक्की बैरी करते।

पावन गंगा मैली करते।।

दुश्मन आखिर कौन हमारा?

खुशियाँ चूना- खैनी करते।।-26

2212/2212/22

होना भी आखिर राख ही तो है।

मिल आग पानी, खाक ही तो है।।

कर लो गुनाहों से किनारा तुम।

हो आदमी, ये साख ही तो है।।-27

2122/2122/2122/212

देश अपना तोड़ चलता, आदमी वो कौन है?

दुश्मनी अपनों से करता, आदमी वो कौन है??

जातियों में बाँटकर, जो ढूँढ़ता खुशियाँ बड़ी।

आज का शैतान ऐसा, आदमी वो कौन है??-28

2122/2122/2212/22

दोस्ती यारी में, यादों की कारवां लिये चलते।

दोस्ती में हम दिवाने, सर आसमाँ लिये चलते।।

खूबसूरत दोस्ती यारी ये जमाने की खुशियाँ ।

मुफलिसी में मुस्कुराहट का बागबाँ लिये चलते।।-29

2212/2122/2212/22

आखिर जनाजा निकलना ही है तो रोना क्या?

सब कमाया छोड़ चलना ही है तो रोना क्या??

ये जिन्दगी जब तलक यारों, मुस्कुराना है।

आए किसी पल में मरना ही है तो रोना क्या??-30

2122/2122/122

दिलजलों से फासला तो रहेगा।

बंद उनका रास्ता तो रहेगा।।

दुश्मनी या फिर अदावत हमारी।

एक कोई फैसला तो रहेगा।।-31

2212/2212/2212

दुश्मन हमारे सब, बगावत में खड़े।

बेकार कर दुनिया, अदावत में खड़े।।

हैवानियत की है हदों को पार कर!

सरकार से लड़ने, नफासत में खड़े।।-32

2122/2122/2122/2122

जिन्दगी की राह कितनी संकरी हो, चलना तो है।

मुफलिसी या बेबसी चाहे जैसी हो, जीना तो है।।

जिन्दगी कहिए, खुदा के हाथों होती यार सबकी।

मुस्कुराना भी न आए हमको, फिर भी हँसना तो है।।-33

22/22/22/22/22

रिश्तों की बातें करना आए तो।

अपनों की बातें सुनना आए तो।।

अपना ही दर्द बस, दिखता सबको है।

मुश्किल में सबको हँसना आए तो।।-34

1221/2122/1212/2212

कहीं आग लग रही तो, कहीं लगाई जा रही।

सियासत में गजब ये दुश्मनी निभाई जा रही।।

बहुत हो चुका तमाशा, जमाने का भी आज है?

यहाँ बेवकूफ कहकर, हमें लड़ाई जा रही।।-35

1212/1122/1212/22

हमी से प्यार, हमी से ही रार करते हो।

बड़े ही प्यार से दुनिया अंधार करते हो।।

जमाने संग तुम्हे रहना और चलना है।

है दुश्मनी क्या जो, खुशियाँ बेकार करते हो।।-36

212/212/212/212

आज का आदमी हो रहा दर बदर।

आदमी जिन्दगी जी रहा बेबहर।।

छोड़ घर भागती चल रही बेटियाँ।

बोल अखबार का, मातु-पिता बेखबर।।-37

1212/2121/212

अजब गजब शौक पाल रख्खे हैं।

शहर -शहर मौत बाँट रख्खे हैं।।

जहर है गुटका, सभी ये जानते।

मगर गली चौक नाप रख्खे हैं।।38

1222/1222/1222

इबादत की मुहब्बत में अदावत क्या?

नफासत की मुहब्बत में इबादत क्या??

किसी के वास्ते जीना जिन्हें आए?

जहाँ में यार फिर, अपनों बगावत क्या??-39

2122/2122/2122/2

राज दिल का छुपाया भी नहीं जाता।

चेहरा कोई भुलाया भी नहीं जाता।।

यूँ बिना देखे जिन्हें, जीना हुआ मुश्किल?

भूल उनको मुस्कुराया भी नहीं जाता।।--40

212/212/221/122

बुद्ध के देश में तकरार बहुत है।

आदमी आदमी में खार बहुत है।।

आज की जिन्दगी बेकार हो जैसे।

हर किसी काम में इंकार बहुत है।।-41

2212/2122/2122/2

रिश्तों का व्यापार करके मुस्कुराते हैं।

अपने तरीके सभी को आजमाते हैं।।

वो जो सियासत, बगावत का खेल कर चलते।

खाकर नई कसमें झूठी दुनिया दिखाते।।-42

2212/2212/22

हद पार की जो दोस्ती करते।

खुशियाँ बड़ी की बंदगी करते।।

वो चोट खाते दोस्तों से ही।

बेकार अपनी जिन्दगी करते।।-43

2122/221/2122/212

हर किसी की जज्बात को समझता कौन है?

हम सँवर जाएँ बात से, वो करता कौन है??

दोस्ती यारी आज की हमारी बंदगी।

आजकल पर अपनों को पूछ चलता कौन है??-44

22/22/22/22
तेरी मेरी की ये दुनिया।
आँखों आज नहीं है खुशियाँ ।।
उजड़े इंसानों की बस्ती।
अपनों में आज यही कमियाँ।।-45

22/22/22/22/22
दुनिया को और भी खोना बाकी है।
दुनिया को और भी रोना बाकी है।।
बम बारूद नहीं जो रूकेंगे तो?
लाशों को और भी ढोना बाकी है।।-46

2122/2212/2212/2
साजिशों की दुनिया बड़ी होती रही है।
रंजिशों की दुनिया बड़ी होती रही है।।
आदमी का इंसानियत को छोड़ने से।
जाहिलों की दुनिया बड़ी होती रही है।।-47

1222/1222/1222
सियासतदान भी माचिस लिये रहते।
जमाना देखकर साजिश किये चलते।।
हमारी आज की दुनिया अदावत की।
जिसे देखो वही रंजिश पाले रखते।।-48

2212/2212/2212/22

हाथों लिये खंजर, हमें आँखें दिखाते हैं।

जिनकी जमी बंजर, वही आँखें दिखाते हैं।।

कोई नहीं अपना यहाँ, जिनसे मिलेगा दिल।

दुश्मन हमारे वो, हमें आँखें दिखाते हैं।।-49

2122/2122/2122

अब दवाओं में जहर मिलने लगे हैं।

लोग बसते वो शहर मिलने लगे हैं।।

जानलेवा ये दवाईयाँ शहर में?

क्यूँ दुकानों आज भी विकने लगे हैं??-50

2121/1222/212

आँख कान खुला रखना चाहिये।

दुश्मनों को डरा रखना चाहिये।।

आप जो भी हमारी सरकार हैं।

हौसले को जगा रखना चाहिये।।-51

22/22/22/22/2

कोटे से आते जाते नेता।

देश हमारे का आज विधाता।।

फूटे भाग अगर जनता के हैं?

झूठे बन जाते विश्व विजेता।।-52

नाम– डॉ. अजय किशोर नाथ पाण्डेय 'बेबस'

पिता– स्व. द्वारिकानाथ पाण्डेय

जन्मतिथि– 12 जनवरी 1962

शिक्षा – बी0 ए0 (आनर्स)

विद्या – कहानी, कविता, गीत–गजल, शेर आदि लेखन कार्य के अतिरिक्त पेंटिंग, तथा सामाजिक कार्य में रुचि, छंद मुक्त रचना के प्रति अभिरुचि।

सम्मान– पेंटिंग एवं लेखन में कई संस्थाओं के साथ राज्य स्तरीय पुरस्कार एवं सम्मान प्राप्त।

उपलब्धि– 10 से अधिक एकल संग्रह एवं साझा संग्रह प्रकाशित, जिला एवं राज्य स्तरिय कार्यक्रमों मे जज की भूमिका। नागपुरी की कविताऐं स्कुल एवं कालेज के पाठ्यक्रमों में शामिल।

पता– चेटर, पोस्ट–जिला –गुमला
झारखंड, पिन 835207
व्हाट्सअप मो0 नं0 91101950180

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स
Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/

978-93-94528-07-9

मूल्य- 100/-

15, नेहरू चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला- बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331, मो.- 9009423393, ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com